✱ जनसंख्या एवं नगरीकरण

किसी देश के विकास के लिए केवल बड़े क्षेत्र या विशाल प्राकृतिक संसाधनों का होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इन संसाधनों को सम्पदा में बदलने के लिए मानव प्रयास भी आवश्यक होता है जिसकी मानव समुदाय द्वारा होती है यही मानव समुदाय (जनसंख्या) कहलाती है। इसे शब्दों में जनसंख्या के द्वारा जहाँ एक ओर उत्पादन के लिए श्रमबल प्राप्त होता है, वही दूसरी ओर इन उत्पादों के लिए बाजार भी। जनसंख्या का आकार छोटा होने पर उत्पादन की नवीन प्रक्रियाओं को प्रोत्साहन नहीं मिलता है। वही फलस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि नहीं होती।

माना जाता है कि देश में संसाधनों के सापेक्ष तथा तकनीकी प्रगति की तुलना में, जनसंख्या का अधिक भार है, जो भारत के आर्थिक विकास के लिए एक चुनौती है। 20 वीं शताब्दी के आरंभ में भारत की जनसंख्या 23 करोड़ 84 लाख थी, जो की 21 वीं शताब्दी में बढ़कर 1 अरब 2 करोड़ 80 लाख तक पहुंच गई। संयुक्त राष्ट्र संघ के सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक भारत जनसंख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़कर विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश हो जाएगा।

जनसंख्या किसी भी राष्ट्र के लिए संपत्ति और दायित्व दोनों है। (Population is Doh as asset and liability for the Nation)

✱ जनसंख्या के प्रमुख सिद्धांत

माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत :→ टी. आर. माल्थस ने 1798 में

जनसंख्या से संबंधित अपना सिद्धांत दिया। जिसके अनुसार जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितीय पद्धति 2, 4, 8, 16 ..... में होती है जबकि खाद्यान्न में वृद्धि अंकगणितीय पद्धति 1, 2, 3, 4 ..... में होती है।

★ **अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत :—** इस सिद्धांत के प्रतिपादक एडविन कैनन को जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार अनुकूलतम जनसंख्या वह होगी जिस पर प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय अधिकतम हो।

★ **सामाजिक केशिकत्व का सिद्धांत :—** इस सिद्धांत के अनुसार आर्थिक विकास के साथ अधिक बच्चों की इच्छा में गिरावट होती है, प्रजनन दर में कमी होती है तथा साथ ही सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में वृद्धि के कारण मृत्युदर में कमी होती है जो प्रजनन दर में कमी की अपेक्षा अधिक तेज होती है। इन दरों में उत्पन्न अंतराल को 'प्रजनन अंतराल' कहा जाता है।

★ **नियोमाल्थसवाद :—** इस सिद्धांत को मानने वाले अर्थशास्त्रियों में ड्रिसडेल, मेरी स्टोप्स, मॉर्गन प्रमुख है। इन अर्थशास्त्रियों ने परिवार नियोजन तथा संतति निग्रह पर बल दिया।

★ **जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत :—** 1929 में इस सिद्धांत का प्रतिपादन डब्लू एस. थामसन ने किया पर फ्रैंक नोटेन्सटीन द्वारा 1945 में इसे व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया, जिन्हें 'जनांकिकी का जनक' कहा जाता है। यह सिद्धांत आर्थिक विकास के साथ-साथ जन्म दर और मृत्यु दर में होने वाले परिवर्तनों के फलस्वरूप की वृद्धि दर पर प्रकाश डालता है।

साक्स द्वारा बताई गई जनसंख्या परिवर्तन की अवस्था चार प्रकार की है।

(i) **प्रथम अवस्था** → प्रथम अवस्था में लोगों का आर्थिक, सामाजिक दृष्टिकोण तथा दायरा संकीर्ण होता है। संतुलित भोजन, पोषण तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव होता है।

(ii) द्वितीय अवस्था :– द्वितीय अवस्था को जनसंख्या विस्फोट की अवस्था माना जाता है। इस अवस्था मे मृत्यु-दर मे कमी और जन्म दर मे वृद्धि जनसंख्या विस्फोट का कारण बनती है।

(iii) तृतीय अवस्था :– तीसरी अवस्था को भी जनाधिक्य की अवस्था कह सकते हो इस अवस्था मे जन्म-दर गिरने लगती है। लेकिन मृत्यु-दर एक निचले स्तर पर आकर लगभग स्थिर हो जाती है।

(iv) चतुर्थ अवस्था :– इस अवस्था मे जन्म और मृत्यु दर नियंत्रित और नीची होती है। इसमें जनसंख्या स्थिर हो जाती है अथवा इसके गीरने की संभावना बढ़ जाती है।

(v) पांचवी अवस्था :– यह अवस्था, अर्थव्यवस्था के पूर्ण विकास की अवस्था से संबंधित है। इसमे जन्मदर मृत्युदर से नीची हो जाती है।

★ जनसंख्या वृद्धि दर की प्रवृतियाँ :– बीसवी शताब्दी के आरंभ (1901) मे भारत की जनसंख्या 23 करोड के आस-पास 21वीं सदी के आरंभ (2001) मे यह बढ़कर 1 अरब 2 करोड़ 70 लाख तक पहुंच गई। इस प्रकार हम देखते है की 100 वर्षों मे भारत की आबादी तेज गति से बढ़ी है। भारत की जनसंख्या 1911-21 की अवधि को छोड़कर प्रत्येक दशक मे आबादी मे वृद्धि दर्ज की गई है इसका एक कारण यह है की स्वतंत्रता के बाद भारत मे मृत्यु दर मे तेजी से गिरावट हुई है। खासतौर पर अकालो पर नियंत्रण तथा चिकित्सा के कारण यह संभव हुआ है। 1950 से 2006 तक 56 वर्षों मे जहां जन्म दर मे 51.1% की कमी हुई है। वहीं मृत्यु दर 1% से कम रह गयी है। फलत: देश मे जनसंख्या विस्फोट की स्थिति ~~रह गई है~~ मे पहुच चुका है। भारत मे जनसंख्या वृद्धि दर की प्रवृत्तियां को समझने के लिए इसे चार अवधियों मे विभक्त किया जा सकता है :–

1. 1891 – 1921 अवरुद्ध जनसंख्या
2. 1921 – 51 मर्यादित वृद्धि
3. 1951 – 1981 तीव्र ऊँची वृद्धि दर